Gulabrao Maharaj

Gulabrao Maharaj was a Hindu saint from Maharashtra, India. Born in a farmer's family, deprived of education, blinded of on early age, facing adverse conditions all around, he was still credited with giving a vision of life to the people.

Gulabrao Maharaj was born in a Maharashtrian family on 6 July, 1881 to Gonduji Mohod and Alokabai Mohod from the village of Madhan near Amravati. His full name was Gulab Gonduji Mohod. He became blind on being administered the wrong medicine at the age of 9 months. When he was four years old his mother died and he was brought up by his maternal grandmother in Loni Takli village. He was married to Mankarnika, daughter of Ganaji Bhuyar a farmer in nearby village in the year 1896.

Sant Gulabrao Maharaj was known as Pradnyachakshu Madhuradwaitacharya Gulabrao Maharaj. He was called Pradnyachakshu because in-spite of becoming blind at the age of about 9 months, he was master of Vedanta philosophy and many occult and physical sciences. 'Pradnya' means intelligence and eyes are called "chakshu" in Sanskrit language. He had many divine powers that included the 'intellectual eyesight'.

Gulabrao Maharaj displayed his deep intellect and genius through a vast array of writings on Bhakti Vedanta, Sankhya, Nayaya, ethics, Yoga, Ayurevda, music, poetry, literature, plays and scripts in Sanskrit, Marathi, Hindi, Brij and Varhadi. He wrote about 133 books on various subjects containing more than 6000 pages, 130 commentaries and about 25,000 stanzas in poetry. He particularly wrote on the Advait Vedanta of Shri Sankaracharya and Shri Dnyaneshwar Maharaj. He liked the holy songs (Bhajans), holy verses (Shlokas) and reading occult books. He would ask his friends to read the books and would repeat the contents immediately. He had extraordinary memory. He knew all the Vedas and Shastras at the age of ten years. He started writing essays and poetry on religious philosophy since 1897 i.e. from the age of sixteen. He would visit nearby cities, villages and towns and meet people to discuss various topics of religion. In the year 1902 when he was 21, he wrote a commentary on the theories of Darwin and Spencer. He wrote books on various subjects like dhnyan, yoga and bhakti and commentaries on ancient treatises. He wrote on the "Manas Ayurveda", i.e. psychological part in the Ayurveda. He gave valuable guidelines to those who want to attain salvation and gain eternal knowledge.

Gulabrao Maharaj is also called "Dharama Samanvaya Maharshi" because he compared and contrasted Indian Philosophy with western philosophy and put up the theory of reconciliation to remove misunderstandings and conflicts from all religions of the world.

Gulabrao Maharaj died at an early age of 34 years on 20 September, 1915.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Gulabrao Maharaj.

Credits :

Text	:	Based on information received from the proponent
Stamp/ FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Gulistan
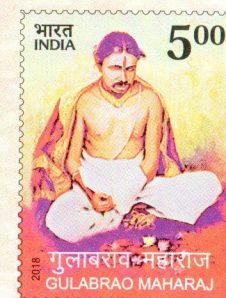
गुलाबराव महाराज

गुलाबराव महाराज, महाराष्ट्र के एक हिंदू संत थे। उनका जन्म एक किसान परिवार में हुआ और दृष्टिहीन, शिक्षा से वंचित एवं हर प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने जनसामान्य को जीने का नया नजरिया दिया।

गुलाबराव महाराज का जन्म महाराष्ट्र में अमरावती के निकट मढाण नामक गांव में गोंडूजी मोहोड़ और आलोकाबाई मोहोड़ के परिवार में 6 जुलाई, 1881 को हुआ। उनका पूरा नाम गुलाब गोंडूजी मोहोड़ था। मात्र 9 माह की आयु में गलत दवा दिए जाने के कारण उनकी दृष्टि चली गई। वे केवल 4 वर्ष के ही थे, जब उनकी माता का निधन हो गया और गुलाबराव का लालन-पालन लोनी टाकली गांव में उनकी नानी के घर हुआ। गुलाबराव का विवाह निकटवर्ती गांव के किसान गणजी भुयार की सुपुत्री मणिकर्णिका से वर्ष 1896 में हुआ।

संत गुलाबराव महाराज को प्रज्ञाचक्षु मधुराद्वैताचार्य गुलाबराव महाराज के नाम से जाना जाता था। उन्हें प्रज्ञाचक्षु इसलिए कहा जाता था क्योंकि मात्र 9 माह की आयु में दृष्टि खो देने के बावजूद वे वेदांत दर्शन के साथ-साथ अनेक तंत्र-मंत्र विद्याओं और भौतिक विज्ञान के महान ज्ञाता थे। संस्कृत में 'प्रज्ञा' का अर्थ है बौद्धिक क्षमता और 'चक्षु' से तात्पर्य है नेत्र। संत गुलाबराव महाराज को तीक्ष्ण बौद्धिक अंतर्दृष्टि सहित अनेक दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं।

गुलाबराव महाराज की प्रखर बौद्धिक क्षमता और अथाह ज्ञान का प्रमाण हमें उनके विभिन्न प्रकार के लेखन कार्य में मिलता है जिसमें भक्ति वेदांत, सांख्य, न्याय, नीति शास्त्र, योग, आयुर्वेद, संगीत, काव्य, साहित्य, नाट्य लेखन और संस्कृत, मराठी, हिंदी, ब्रज और वरहदी में विपुल और व्यापक लेखन शामिल हैं। उन्होंने विविध विषयों पर 133 पुस्तकों की रचना की। उनके इस रचना संसार में कुल 6000 पृष्ठ, 130 टीकाएं और लगभग 25000 पद्यांश शामिल हैं। उनका लेखन कार्य मुख्य तौर पर श्री शंकराचार्य और श्री ज्ञानेश्वर महाराज के अद्वैत वेदांत पर केंद्रित रहा। उन्हें भजनों, श्लोकों के अतिरिक्त तंत्र-मंत्र की पुस्तकें पढ़ना अत्यधिक पसंद था। गुलाबराव महाराज की स्मरण शक्ति अद्भुत थी। वे अपने मित्रों से कहकर पुस्तकें पढ़वाते थे और इस प्रकार सुनकर, वे पुस्तकों की सामग्री को कंठस्थ कर तत्काल दोहरा देते थे। मात्र 10 वर्ष की आयु में ही वे समस्त वेदों और शास्त्रों का अध्ययन कर चुके थे। 16 वर्ष की आयु (अर्थात् सन 1897) से ही उन्होंने धार्मिक दर्शनशास्त्र पर निबंध और काव्य लेखन आरंभ कर दिया था। वे आस-पास के शहरों, कस्बों और गांवों में जाते थे, लोगों से भेंट करते थे और धर्म संबंधी विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करते थे। 21 वर्ष की आयु में सन 1902 में उन्होंने डार्विन और स्पेंसर के सिद्धांतों पर अपनी व्याख्या लिखी। उन्होंने ध्यान, योग और भक्ति जैसे विविध विषयों पर पुस्तकों की रचना करने के साथ-साथ प्राचीन संहिताओं पर टीकाएं भी लिखीं। उन्होंने "मानस आयुर्वेद" की भी रचना की, जोकि आयुर्वेद का मनोविज्ञान संबंधी खंड है। उन्होंने मोक्ष प्राप्त करने के इच्छुक लोगों का पथ-प्रदर्शन किया और उन्हें परम ज्ञान प्राप्त करने की राह दिखाई।

गुलाबराव महाराज को "धर्म समन्वय महर्षि" भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने भारतीय दर्शनशास्त्र और पश्चिमी दर्शनशास्त्र की तुलना की और दोनों के अंतर बताते हुए समन्वय का ऐसा सिद्धांत विकसित किया ताकि विश्व के समस्त धर्मों के बीच मिथ्याबोधों और मतभेदों को समाप्त किया जा सके।

20 सितंबर, 1915 को 34 वर्ष की अल्पायु में गुलाबराव महाराज का निधन हो गया।

डाक विभाग, गुलाबराव महाराज पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण : सुश्री गुलिस्तां

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	3.0 लाख
Stamps Printed	:	3.0 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
https://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00